

क्र. १५५८

६१८/सो १४

संस्कृत

॥ इन्द्राक्षर श्रुत ॥



हे अशुद्धमहे

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अस्य श्रीईद्राक्षी स्तो  
त्रमंत्रस्य ॥ पुरंदररिषिः ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ इं  
द्राक्षीदेवता ॥ श्रीलक्ष्मीबीजं ॥ भूवनेश्वरि  
शुक्ली ॥ माहेश्वरिशकिलकं ॥ ईद्राक्षी  
स्तोत्रपाठेविनीयोगः ॥ अथव्यासः ॥ ईद्रा  
क्षी अगुष्ठाभ्यां नमः ॥ महालक्ष्मीतर्जनी  
भ्यां ४ माहेश्वरिआमीकाभ्यां ० कोमारि ना  
० कनीकाभ्यां ० भूवनेश्वरिकरतळकरष्ट

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥

छांभ्या० ॥ इंद्राक्षीद्विदयाय नमः ॥ महाल  
 क्ष्मीशिरसे स्वाहा ॥ वाराहिशिखोपैवोषट्  
 माहेश्वरिकवचायुह ॥ कोमारिनेत्रत्रया  
 येकोषव् ॥ भवनेश्वरि अग्राय फट् ॥ अ  
 थध्यानं ॥ इंद्राक्षीद्विश्रं जां देवि फलिव  
 स्त्रसमावृता ॥ वामदक्षिणवज्रसंदक्षिणे  
 षेनवरप्रदा ॥ १ ॥ इंद्राक्षीतानयव  
 तिज्जालंकारभूषिता ॥ सुसन्नवदना

शिव

भोजायक्ष किन्नरसेवितो ॥२॥ इति ध्या

नं ॥ ईद्रक्षी नामसादे विदेवले समुदा ३०

दृता ॥ गोरिशकं भरिदे विदुर्गाना न्ति

च विश्रुता ॥ १७ ॥ कात्यायनी महादेवि चंद्र

पंता महालपा ॥ सावित्रीमानगायत्री ब्रह्मा

पी ब्रह्मवादिनी ॥ २॥ नारायणी भद्रकाली

रुद्राणी कृष्णी गला ॥ अग्नी इवाली

रोद्रमुखी कालरात्री रूपस्वीति ॥ ३॥

२०

२५

१

मेघस्यनासहस्राक्षी विकटागी जलोदरि ॥  
महोदरि सुलंबेशी घोररूपामहाबला ॥ ४  
अजिताभद्रजामंदारोगहं श्रीशिवं श्री  
या ॥ शिवदुतिकराक्षी चप्रत्यक्षपरमेश्वरि ॥ ५  
ईद्राक्षी इंद्ररुपा च ईद्रशक्तिपरा जीता ॥  
वाराहिनारसिक्की च भीमाभैरवनादिदि  
नी ॥ ६ ॥ श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या ल

१

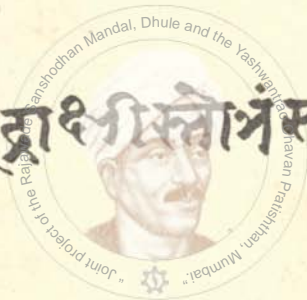
शिव

ईद्रा०

॥ ईति इंद्राक्षीलोभं समासं ॥ ३ ॥ १ ॥

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥



क्षीः सरस्वति ॥ अनंता विजया भद्रा मा  
 नस्तोका पराजिता ॥ ७ ॥ भवानी पार्वति  
 दुर्गा हे मलयं विकाशिया ॥ एते नाम पदैर्दि  
 व्यैः स्तुता शक्तिपथी मता ॥ ८ ॥ शतमाव  
 र्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधीबधनात् ॥ आ  
 वर्तयेत्सहस्रं तु लभते वाष्ठीतं फलं ॥ ९ ॥  
 इति इन्द्राक्षी स्तोत्रं संपूर्णं ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

5

श्रीशिवप्र०॥ ज्वरउवाच॥ नमामित्वा  
 नंभर्त्तां परेशं सवात्मानं केवलं ससि  
 मात्रं॥ विश्वोत्पत्तिस्था संरोधहेतुं य  
 तद्रूपब्रह्म लिंगप्रशांतं॥१॥ कौलो  
 देवं कर्मजीवः स्वभावो द्रव्यं क्षत्रं प्रा  
 णसात्मा विकाराः॥ तसंघातो विजरो  
 हप्रवाहस्त्वभायेषात्तनीषेधंप्रपद्ये॥

२॥



5A

नाना भावेर्हृदये वो षपंने देवान्सा  
धृष्टो कसेतन विभर्षि ॥ हंसुं मार्गा  
नृहिसया वर्तमानां जन्मे तत्ते भारद्वा  
रायभूमे ॥ १ ॥ तस्य अंते ते जसादुःस  
हं नशं तौ ग्रेणात्पुत्रं णे ज्वरेण ॥ ताव  
त्तापो देहिनां तेषि मूलं मासे चरन्त्या

च  
न

6

श्रीगणेशाय नमः

चदाशानुबन्धाः ॥ ४ ॥ श्रीर्दशरुणा  
च ॥ त्रिगिरिस्ते प्रसन्नो स्मिन्नेतुते म  
जराद्रयं ॥ यो नो स्मरति संवादं त  
स्यत्वं न भवेद्रयं ॥ इत्युक्तौ च्युत  
मानं स्पगतो मारु श्वरो जराः ॥ बाण  
स्तुरथमासुः प्रगाद्योत्स्यं जनादिनें ॥

61

॥ इति ज्वरस्तोत्रे सप्त पूर्ण ॥ १ ॥

ज्वरमंत्र ॥ कुबेरते सुरवंगो द्रनदिनं

नेदिमावदु ज्वरमृत्यु भयं यो रं ज्वरना

शायते ज्वरः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

हामंत्र प्रतिदीनी १० जपकरावा ता

पजातो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com